International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 03-11-2020; Accepted: 17-11-2020; Published: 03-12-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 6; 2020; Page No. 116-117

उर्मिला शुक्ल की कहानियों में स्त्री विमर्श

शिल्पी कुमारी[1], डॉ. रेशमा अंसारी[2]
[1] शोधार्थी, हिन्दी विभाग, मैट्स विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत
[2] प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, हिन्दी, मैट्स विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

सारांश
स्त्री विमर्श रूढ़ हो चुकी मान्यताओं व परम्पराओं के प्रति असंतोष व उससे मुक्ति का स्वर है। पितृसन्तात्मक समाज के दोहरे नैतिक मापदडों, मूल्यों व अंतर्विरोधों को समझने व पहचानने की गहरी अंतर्दृष्टि है। स्त्री सशक्तिकरण के इस दौर में भारतीय नारी विषयक दृष्टि की प्रासंगिकता अब पूरे विश्व में सिद्ध हो रही है। नारी अब अबला, पराश्रिता, सुकोमला नहीं रही। बड़े–बड़े संघर्षों, चुनौतियों और संकटो में उसकी रचनात्मकता तथा शक्ति–रूप छवि अब विशेष रूप से उजागर होने लगी है। छत्तीसगढ़ की महिला लेखिकाओं में राज्य की प्रसिद्ध महिला साहित्यकार और प्रथम डी.लिट उपाधि प्राप्त डॉ. उर्मिला शुक्ल ने अपनी रचनाओं के माध्यम से स्त्री विमर्श को समृद्ध किया है। 'गोदना के फूल' से लेकर 'इक्कीसवीं सदी में नारी' तक की उनकी रचनाओं में स्त्री विमर्श देखने को मिलता है।

मूल शब्द: स्त्री विमर्श, गोदना के फूल, मैं फूलमती और हिजड

प्रस्तावना
लेखन के क्षेत्र में स्त्रियों का पदार्पण भले ही बाद में हुआ, किन्तु उनकी सृजनशीलता अत्यंत प्राचीन है। जब वे साक्षर नहीं थीं, तब मौखिक रूप से उनकी रचनाएँ पीढ़ी–दर–पीढ़ी चलती थीं। लोकगीत इसका अप्रतीम उदाहरण है। "लोकगीतों के आदि शोधकर्ता श्री रामनरेश त्रिपाठी ने गहरा अध्ययन करके यह निष्कर्ष निकाला है कि स्त्रियों के गीतों में पुरूषों का मिलाया हुआ एक शब्द भी नहीं है। स्त्री गीतों की सारी कीर्ति स्त्रियों के ही हिस्से की है। यह संभव हो सकता है कि एक–एक गीत की रचना में बीसों वर्ष और सैकड़ों मस्तिष्क लगे हों, पर मस्तिष्क थे स्त्रियों के ही यह निर्विवाद है।
आधुनिक हिन्दी साहित्य में पिछले दो–तीन दशकों से स्त्री लेखन में ज्यादा उभार आया है, किन्तु यह कड़ी महादेवी वर्मा के लेखन के साथ ही आरंभ हो गई थी। आज भी जब स्त्री लेखन में स्त्री जीवन और उसकी समस्याओं से जुड़ी बातों, स्त्री–पुरूष संबंधों की तलाश की जाती है तो महादेवी वर्मा की रचना "श्रृंखला की कड़ियाँ" नामक निबन्ध संग्रह का उल्लेख करना लाजमी हो जाता है। इन सम्बन्धों में उनके द्वारा व्यक्त विचार वर्तमान स्त्री लेखन को एक रचनात्मक ऊर्जा प्रदान करते हैं।
स्त्री न तो घर का अलंकार मात्र बनकर रहना चाहती है और न ही देवता की मूर्ति बनाकर प्राण प्रतिष्ठा चाहती है। आज हमारी परिस्थिति कुछ और ही है। कारण वह जान गई है कि एक का अर्थ अन्य की शोभा बढ़ाना है तथा उपयोग न रहने पर फेंक दिया जाता है और दूसरे का आशय दूर से उस पुजापे को देखते रहना है जिसे उसे न देख कर उसी के नाम पर लोग वोट लेंगे। जीवन के हर क्षेत्र की तरह एक लम्बे समय तक स्त्री साहित्य लेखन के क्षेत्र से भी अनुस्थित रही है। पुनर्जागरण तथा स्वतन्त्रता आन्दोलन के दौर में यदा–कदा यदि वह नज़र भी आई है तो अपनी विशिष्ट पहचान रेखांकित नहीं करा सकी। परन्तु पिछले कुछ दशक से लेखन के क्षेत्र में महिलाओं की सशक्त भागीदारी बढ़ी है। स्वतन्त्रयोन्तर कालखंड में कई महिला रचनाकारों का सामान रूप से योगदान प्राप्त होता है। ऐसे उपन्यास हमें प्राप्त होते है जो मात्र नारी जीवन के विभिन्न परिस्थितियों को उद्घाटित करते हैं।
पुरूष जब भी स्त्री यातना पर लिखता है, हमदर्द बनकर, स्त्री को विषय बनाकर उसकी पीड़ा का अनुमान भर लगाता है, पर जब स्त्री रचनाकार अपना दर्द बताने के लिये कलम चलाती है तो उसे उसके दूरगामी परिणाम भोगने पड़ते हैं। ऐसा क्यों होता है कि जब कोई स्त्री रचनाकार वैयक्तिक अनुभवों की अभिव्यक्ति का जोखिम उठाना पड़ता है तो कहानी की नायिका को रचनाकार से जोड़ कर देखा जाता है ? स्त्री रचनाकार अपनी निजता को पर लगा कर समाज के उलाहनों का शिकार क्यों बनती है? खुला लिखने वाली स्त्री रचनाकार क्यों हर बार मानसिक हिंसा का शिकार होती है।
इस सम्बन्ध में डॉ. उर्मिला शुक्ल जी का छत्तीसगढ़ में महिला लेखन के क्षेत्र में प्रथम प्रकाशित कहानी संग्रह "गोदना के फूल" लोकप्रिय रहा है, जिसमें स्त्री विमर्श का उन्होंने सूक्ष्म अंकन किया है। उर्मिला शुक्ल जी ने स्त्री जीवन की वास्तविक परिस्थितियों पर प्रकाश डाला है। साहित्यकार अपने सृजन के माध्यम से समाज के लिये पथ–प्रदर्शक का कार्य करता है। इतिहास के पन्ने इस बात के साक्षी है कि स्वतन्त्रता के आन्दोलन में साहित्यकारों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। साहित्यकार समाज में फैली कुरूरीतियों पर गद्य व पद्य की विभिन्न विधाओं के माध्यम से समाज से समाज में जागरूकता का विस्तार करता है। डॉ. उर्मिला शुक्ल ने अपनी विभिन्न कहानियों, कविताओं, समीक्षा तथा उपन्यास के माध्यम से स्त्री विमर्श पर गहन दृष्टिपात किया है। डॉ. उर्मिला शुक्ल बहुत कुछ लिखतीं है, लेकिन कहानी उनकी प्रमुख विधा है। उनका कहानी संग्रह "मैं फूलमती और हिजड़े" में उनकी दस कहानियाँ संकलित है। उर्मिला शुक्ल की इन कहानियों में न केवल स्थानीयता का विन्यास है, बल्कि वहां के जनजीवन का एक धड़कता इतिहास भी है। उर्मिला शुक्ल जी अपनी कहानी को जिस जमीन से उठाती हैं, उसमें जमीन की सौधी गंध ही नहीं, उस जमीन में रचा–बसा पानी भी है और यही इन कहानियों की पहचान है। मैं फूलमती और हिजड़े ऊपर से देखने पर एक छोटी कहानी लगती है, लेकिन इस कहानी के भीतर प्रवेश करने पर एक बड़ी कहानी नज़र आती है, क्योंकि इसके भीतर समाज के हाशियें के लोगों का चीत्कार और हाहाकार है। उर्मिला शुक्ल जी ने महिलाओं की स्थिति पर अपनी अनुभूतियाँ अपने साहित्य के माध्यम से व्यक्त की है।

"उर्मिला शुक्ल जी कहतीं हैं कि मेरी रचना यात्रा की सहयात्री ये कहानियाँ उन वंचितों की कहानियाँ है, जिन्हें समाज हाशिये पर रखता आया है। ये सोचकर कि जो अब तक उसके जुल्म, उसकी ज्यादतियाँ सहते रहे, अभी भी सहेंगे, क्योंकि सहना ही नियति है, उनकी मगर उसकी ये सोच इस वक्त ढह जाती है, जब उसके खिलाफ आवाज़ उठती है और ये संग्रह आवाज़ है, उसी वर्ग की जो जनम–जनम से शोषित रहा है। इसलिये इस संग्रह की कहानियाँ वंचितों के साथ खड़ी होती है।

वैसे वंचित तो वंचित ही हैं, ऊपरी तौर पर उनको कोई फर्क नज़र नहीं आता, मगर समाज को थहाया जाये तो ये हकीकत सामने आती है कि वंचितों में भी एक कोटि है और वो है महावंचितों की। आप पूछेंगे वो कौन है, इस समाज में जिसे मैंने इस महावंचित वर्ग में रखा है ? तो मेरा जवाब होगा स्त्री। क्योंकि समाज में वंचित और शोषित कहलाने वाले लोग भी स्त्री के शोषण में पीछे नहीं हैं। मगर अब स्थितियाँ बदली है, स्त्रियाँ अब अपनी खुद मुख्तियार हुई हैं और ये बदलाव अपने आप नहीं आया। स्त्रियों ने इसे हांसिल किया है। अब उन्होंने अपने को वस्तु से इंसान में बदल लिया है, मुझे विश्वास है कि मेरी अधिकांश कहानियाँ इस बात की गवाही देगी। "उर्मिला शुक्ल जी उन लेखिकाओं में हैं जिन्होंने नारीवाद की वैचारिकता को समझने की कोशिश की है और लगातार लिखा है। अपने साहित्य के माध्यम से नारी जीवन को व्याख्यायित करते हुए उर्मिला जी ने उसकी स्वतन्त्रता की हिमायत की है। अपने साहित्य के माध्यम से उर्मिला शुक्ल जी ने कई नारी पात्रों से नारी स्वतन्त्रता के समर्थक के रूप में अपना परिचय दिया है तथा नारी मुक्ति के प्रश्न भी उठाये हैं। उर्मिला शुक्ल जी ने छत्तीसगढ़ी और हिन्दी दोनों में लेखन कार्य किया और उनका लेखन अनवरत जारी है।

यद्यपि साहित्य में स्त्री विमर्श के अंतर्गत स्त्री द्वारा लिखा गया और स्त्री के विषय में लिखा गया साहित्य "साहित्यिक स्त्री विमर्श माना जाता है तथा इसके मूल में अनुभव की प्रमाणिकता का तर्क दिया जाता है। इण्डिया–टुडे की साहित्यिक वार्षिकी (1997) में स्त्री लेखन में स्त्री के एकाधिकार पर काफी बहस हुई। यद्यपि उसमें पुरूष रचनाकारों की भागीदारी नहीं थी, फिर भी अधिकांश रचनाकारों ने यह स्वीकारा कि लेखन, लेखन होता है, नर मादा नहीं। उसे बांट कर देखने वाली दृष्टि पूर्वग्रह से ग्रस्त है। स्त्री होने के नाते स्त्री ही स्वानुभूति पर आधारित प्रमाणिक व विश्वसनीय साहित्य की रचना कर सकती है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. देशपाण्डे, वैशाली, स्त्रीवाद और महिला उपन्यासकार, विकास प्रकाशन, कानपुर, 2007.
2. महादेवी वर्मा, श्रृंखला की कडियां, लोकभारती पैपर बेक्स, इलाहाबाद, 2012
3. उर्मिला शुक्ल, मैं फूलमती और हिजड़े, नमन प्रकाशन, नई दिल्लीं.